



पंच गौरव पुस्तिका

जिला डीडवाना –
कुचामन





मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

विषय—सूची

क्र.सं.	विषय	पेज संख्या
1	प्रस्तावना	
2	कार्यक्रम के उद्देशय	
3	कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना	
अ	नोडल विभाग	
ब	समन्वय	
4	कार्यक्रम की प्रभावशीलता और सफलता सुनिश्चित करने के लिए मानदंड	
5	अनुमत कार्य	
6	गैर—अनुमत कार्य	
7	बजट	
8	जिलेवार चिन्हित पंच गौरव की सूची	

1. प्रस्तावना

डीडवाना—कुचामन जिला: एक संक्षिप्त परिचय

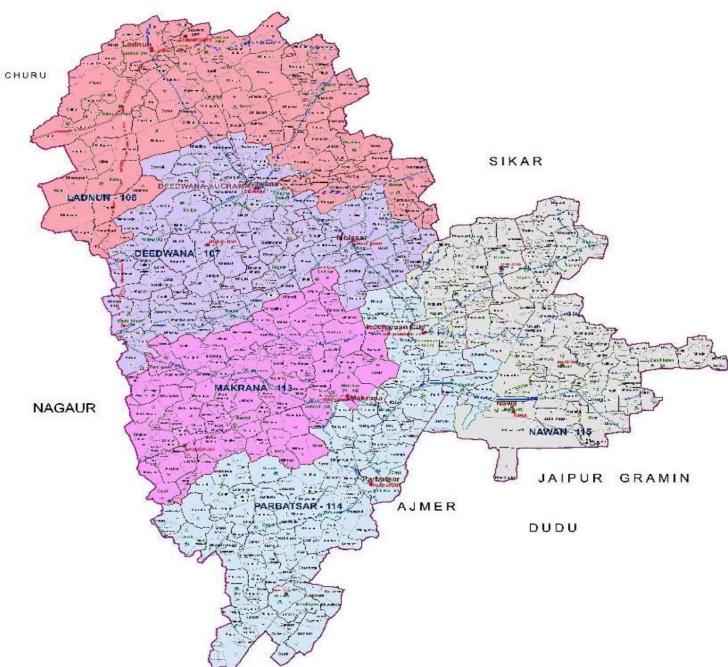
डीडवाना—कुचामन जिला राजस्थान का नवीनतम जिलों में से एक जिला है। डीडवाना—कुचामन जिला राजस्थान के मध्य भाग में स्थित है और यह ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा कृषि की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण जिला है। यह जिला राजस्थान के सबसे मध्यम जिलों में से एक है और अपनी समृद्ध विरासत, विशिष्ट कृषि उत्पादों तथा धार्मिक—सांस्कृतिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है।

भौगोलिक स्थिति एवं प्रशासनिक विभाजन

डीडवाना—कुचामन जिला राजस्थान के हृदयस्थल में स्थित है और यह कई प्रमुख जिलों से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में चुरू, पश्चिम में नागौर, दक्षिण में अजमेर और पूर्व में जयपुर एवं सीकर जिले स्थित हैं।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व

डीडवाना—कुचामन का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। यह क्षेत्र नागवंशी राजाओं, प्रतिहारों, चौहानों और राठौड़ वंश के शासनकाल का साक्षी रहा है। यहाँ स्थित डीडवाना झील प्राचीन काल से नमक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ अनेक पशु मेले भरते हैं।



पंच-गौरव कार्यक्रम

डीडवाना—कुचामन जिलें में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों पाई जाती हैं। जिले में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही डीडवाना—कुचामन में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई ईकाईयां हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी डीडवाना—कुचामन जिलें में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। जिले की विभिन्न खेल गतिविधियां में प्रमुख पहचान रही हैं। जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए डीडवाना—कुचामन जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा रही है। जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के जिले के सर्वांगीण विकास हेतु डीडवाना—कुचामन में “पंच गौरव” कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। कार्यक्रम अन्तर्गत जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच गौरव” के रूप में जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गये। जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना क्रियान्वित है।

2. कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरीकरण और क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता , विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलें में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिले से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख बनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सुजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- जिलें में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

3. कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना

अ. नोडल विभाग

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग आयोजना विभाग होगा। राज्य स्तर पर एक जिला—एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला—एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला—एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला—एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेंगे।

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार राज्य स्तरीय समिति का गठन किया जाएगा—

क्र.सं	अधिकारी	पद
1.	मुख्य सचिव	अध्यक्ष
2.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव/सचिव, उद्योग एवं वाणिज्य	सदस्य
3.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी	सदस्य
4.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन	सदस्य
5.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव/सचिव, खेल एवं युवा मामलात्	सदस्य
6.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव/सचिव, पर्यटन, कला एवं संस्कृति	सदस्य
7.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/ प्रमुख शासन सचिव/सचिव, सूचना एवं जन सम्पर्क	सदस्य
8.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, वित्त अथवा उनके द्वारा नामित संयुक्त शासन सचिव स्तर के अधिकारी	सदस्य
9.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/ प्रमुख शासन सचिव / सचिव, आयोजना	सदस्य
10.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, सदस्य सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग	सदस्य
11.	निदेशक एवं संयुक्त सचिव, आर्थिक एवं सांख्यिकी	सदस्य सचिव

ब. समन्वय

प्रत्येक जिले में, जिला कलेक्टर इन 5 विभागों के साथ समन्वय बनाते हुए इस कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करायेंगे। जिले का स्थानीय प्रशासन और विकास अधिकारी कार्यक्रम के कार्यान्वयन और प्रमाणिकता के मूल्यांकन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित मानदंडों के अनुरूप संचालित हों। पच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया जाएगा:—

क्र.सं	अधिकारी	पद
1	जिला कलेक्टर	अध्यक्ष
2	जिला स्तरीय अधिकारी उद्योग, कृषि एवं उद्यानिकी वन एवं पर्यावरण, खेल एवं युवा मामलात, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग	सदस्य
3	जिला कलक्टर द्वारा नामित राजस्थान लेखा सेवा का अधिकारी	सदस्य
4	संयुक्त / उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी जिला कार्यालय	सदस्य सचिव

जिला कलक्टर समिति की बैठक में आवश्यकतानुसार अन्य अधिकारियों को भी आमंत्रित कर सकेंगे।

"पंच गौरव" प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी कियान्वयन हेतु निम्नानुसार "पंच गौरव प्रोत्साहन समिति" डीडवाना—कुचामन का गठन किया गया है।

क्र.सं.	अधिकारी	पद
1	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2	<p>जिला स्तरीय अधिकारी</p> <ul style="list-style-type: none"> ● उप वन संरक्षक, डीडवाना—कुचामन ● महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, डीडवाना—कुचामन ● संयुक्त निदेशक, कृषि / कृषि विस्तार, डीडवाना—कुचामन ● संयुक्त निदेशक, सुचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, डीडवाना—कुचामन ● उप निदेशक, उद्यान विभाग, डीडवाना—कुचामन ● सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग अजमेर(संभाग कार्यालय) ● सहायक निदेशक सुचना व जन सम्पर्क विभाग डीडवाना—कुचामन ● जिला खेल अधिकारी, डीडवाना—कुचामन ● लेखा अधिकारी जिला कलक्टर कार्यालय डीडवाना—कुचामन 	सदस्य
3	उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग डीडवाना—कुचामन	सदस्य सचिव

जिला स्तरीय समिति के कार्यः—

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
5. पंच गौरव-जिला पुस्तिका तैयार करना।

समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

पंच गौरव डीडवाना—कुचामन

“पंच गौरव” राजस्थान सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की विशिष्ट पहचान को बढ़ावा देना है। इस कार्यक्रम के तहत, प्रत्येक जिले में निम्नलिखित पांच क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता है:

1. एक जिला—एक उपज : जिले की प्रमुख कृषि उपज को प्रोत्साहित करना।
2. एक जिला—एक वानस्पतिक प्रजाति : जिले में पाई जाने वाली विशिष्ट वनस्पति प्रजाति का संरक्षण और संवर्धन।
3. एक जिला—एक उत्पाद : जिले में निर्मित विशेष उत्पाद को बढ़ावा देना।
4. एक जिला—एक पर्यटन स्थल : जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल का विकास और प्रचार—प्रसार।
5. एक जिला—एक खेल : जिले में लोकप्रिय खेल को समर्थन और सुविधाएं प्रदान करना।

डीडवाना—कुचामन जिले में चिह्नित “पंच गौरव”

- एक जिला—एक उपज: **प्याज** की खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- एक जिला—एक जिला—एक वानस्पतिक प्रजाति: **खेजड़ी** वृक्ष के संरक्षण और संवर्धन पर जोर दिया गया है।
- एक जिला—एक उत्पाद: **मार्बल व ग्रेनाईट** के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- एक जिला—एक पर्यटन स्थल: **डीडवाना झील** का विकास किया जा रहा है।
- एक जिला—एक खेल: **बास्केटबाल** खेल को विशेष समर्थन और सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्थानीय संसाधनों और विशेषताओं का उपयोग करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, रोजगार के अवसर सृजित करना और जिले की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखना है।

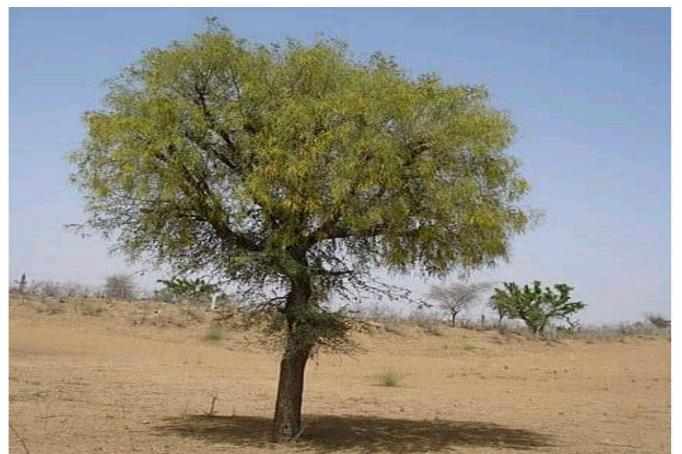
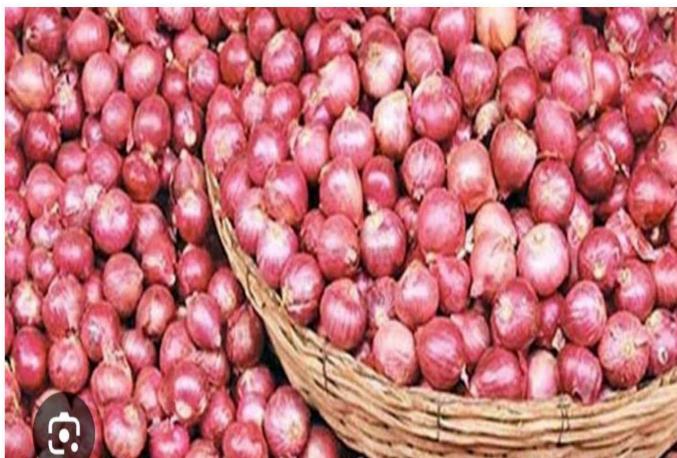
राजस्थान सरकार की ओर से एक अभिनव पहल करते हुए हर जिले को एक नई पहचान देने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास को नाम दिया गया है पंच गौरव। जिले में एक उपज, एक प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल और एक खेल पर विशेष रूप से ध्यान देने तथा समुचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए जिले के पंच गौरव के रूप में जाना जाएगा।

पंच गौरव के तत्व	नाम	विवरण
एक जिला एक उत्पाद	मार्बल एवं ग्रेनाइट	जिले में देश का सबसे उच्च गुणवत्ता उक्त संगमरमर(मार्बल) निकलता है।
एक जिला एक प्रजाति	बास्टेकबॉल	डीडवाना—कुचामन में बास्टेकबॉल का इतिहास लगभग 60 वर्ष पुराना है। जिले से लगभग 50 से 60 राष्ट्रीय तथा 1500 राज्य स्तरीय खिलाड़ी खेल चुके हैं।
एक जिला एक उपज	प्याज	प्याज जिले की मुख्य कृषि उपज है। जिले भर में लगभग 8000–10000 हैक्टर क्षेत्रफल में प्याज उगाया जाता है।
एक जिला एक पर्यटन स्थल	डीडवाना झील	जिले में स्थित डीडवाना झील राजस्थान की खारे पानी की झीलों में दूसरा स्थान रखती है, जो लगभग 03 से 05 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है।
एक जिला एक खेल	खेजड़ी	राजस्थान का राज्य वृक्ष, जिसे रेगिस्तान का गौरव, कल्पवृक्ष एवं शमी भी कहा जाता है।

पंच गौरव कार्यक्रम : राजस्थान सरकार की अनूठी पहल

परिचय: राजस्थान सरकार ने प्रदेश के प्रत्येक जिले की विशिष्ट पहचान को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए पंच गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है। इस योजना का उद्देश्य स्थानीय उत्पादों, खेलों, पर्यटन स्थलों, सांस्कृतिक धरोहरों और कृषि उपज को सशक्त करना है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले और जिले की अनूठी विशेषताओं को संरक्षित और प्रचारित किया जा सके।

पंच गौरव कार्यक्रम – जिला डीडवाना–कुचामन



पंच गौरव के पाँच प्रमुख घटक

1 एक जिला – एक उत्पाद (ODOP)

राजस्थान के प्रत्येक जिले में पारंपरिक रूप से तैयार किए जाने वाले उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए 'एक जिला – एक उत्पाद' योजना लागू की गई है। इससे स्थानीय कारीगरों, व्यापारियों और लघु उद्योगों को लाभ मिलेगा, जिससे उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचने का अवसर मिलेगा।

2 एक जिला – एक पर्यटन स्थल

राजस्थान अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है। इस योजना के तहत प्रत्येक जिले के एक प्रमुख पर्यटन स्थल को विकसित किया जा रहा है ताकि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके और स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ें।

3 एक जिला – एक खेल

राजस्थान के युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने और खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए 'एक जिला – एक खेल' योजना लागू की गई है। हर जिले में एक पारंपरिक या लोकप्रिय खेल को बढ़ावा दिया जाएगा।

4 एक जिला–एक वनस्पतिक प्रजाति

जिले में पाई जाने वाली विशिष्ट वनस्पति प्रजाति का संरक्षण और संवर्धन।

5 एक जिला – एक उपज

राजस्थान के कृषि क्षेत्र को मजबूती देने के लिए 'एक जिला – एक उपज' योजना चलाई जा रही है। इसके तहत प्रत्येक जिले की प्रमुख कृषि उपज को आधुनिक तकनीकों और बेहतर विपणन रणनीतियों के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाएगा।

पंच गौरव कार्यक्रम के लाभ

- स्थानीय उत्पादों और कारीगरों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान
- पर्यटन को बढ़ावा देकर स्थानीय रोजगार सृजन
- खेल प्रतिभाओं को निखारने और खेलों के प्रति रुचि बढ़ाने का अवसर
- संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण एवं प्रचार—प्रसार
- कृषि उपज की गुणवत्ता सुधारकर किसानों की आय में वृद्धि

पंच गौरव कार्यक्रम राजस्थान सरकार की एक दूरदर्शी पहल है जो प्रदेश के प्रत्येक जिले की पहचान को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का काम कर रही है। यह योजना स्थानीय उत्पादों, पर्यटन, खेल, संस्कृति और कृषि को प्रोत्साहित करके राजस्थान के आर्थिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

एक जिला एक उत्पाद :— मार्बल एवं ग्रेनाईट

मकराना मार्बल भारत वर्ष में उच्च गुणवत्तायुक्त संगमरमर मार्बल उत्खनन एवं मार्बल से बनी कलाकृतियों के लिए भारतवर्ष के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी अपनी पहचान बनी हुई है। मकराना व आस पास में 800 से अधिक मार्बल खाने स्थित है। 5 हजार से अधिक मार्बल गोदाम एवं 300 से अधिक हेडिङ्क्राफ्ट एवं मार्बल घड़ाई के बाड़े तथा मार्बल चिराई हेतु गेंगसा मशीनें स्थित हैं।

मकराना में संगमरमर से बनी अनेकानेक कलाकृतियां सहज ही किसी को भी आकर्षित करने का क्षमता रखती है। इसका उपयोग आगरा में ताजमहल, कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल तथा अयोध्या में राम मंदिर जैसे कई प्रतिष्ठित इमारतों को बनाने में किया गया है। मकराना के सफेद संगमरमरी पत्थरों में बेहतरीन कारीगरी से तराशे गये माउण्ट आबू स्थित देलवाड़ा तथा नाकौड़ा के जैन मन्दिर अद्भूत स्थापत्यकला का उदाहरण है।

- मकराना मार्बल का रंग मुख्यतः शुद्ध सफेद होता है लेकिन कुछ में हल्का ग्रे या गुलाबी रंग भी पाया जा सकता है।
- यह संगमरमर अपनी कठोरता और मजबूती के लिए जाना जाता है जो इसे निर्माण और सजावट के लिए एक लोकप्रिय विकल्प बनाता है।
- मकराना मार्बल की सतह चमकदार होती है जो प्रकाश को अच्छी तरह से प्रतिबिंबित करती है।
- संगमरमर की घनिष्ठ इंटरलॉकिंग विशेषता इसे मजबूतए कठोर और पारदर्शी बनाती है।
- यह संगमरमर लंबे समय तक अपनी चमक और सफेद रंग को बनाए रखता है।



एक जिला एक खेल :— बास्केटबॉल

दूनिया का दूसरा सर्वाधिक तेज गति से खेले जाने वाले बास्केटबॉल खेल का आविष्कार कनाडाई शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षक जेम्स नेस्मिथ ने स्प्रिन्गफिल्ड मेसाचुसेट्स में किया। भारत में बास्केटबॉल कि शुरुवात कनाड़ा के टी डंकन पेटन ने की। पहली राष्ट्रीय बास्केटबॉल वैम्पियनशिप 1934 में नई दिल्ली में आयोजित कि गई।

भारतीय बास्केटबॉल संघ की स्थापना सन 1950 में की गई। इसी क्रम में राजस्थान बास्केटबॉल संघ की स्थापना 1951 में की गई। तथा उसके बाद यह खेल राजस्थान में इतना प्रसिद्ध हो गया तथा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर यहाँ के खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण तत्कालीन राज्य सरकार ने इस खेल को राज्य खेल घोषित किया।

डीडवाना—कुचामन जिले में बास्केटबॉल

बास्केटबॉल जैसे खेल की शुरुवात जिले में आज से 65 वर्ष पहले हो गई थी। उसके बाद सन 1965 में डीडवाना में नागौर जिला बास्केटबॉल संघ की स्थापना की गई। इसके बाद लगातार राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में यहाँ के खिलाड़ी भाग लेने लगे।

डीडवाना में सबसे पहले राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का शानदार आयोजन 1974 में किया गया। तबसे लेकर आज दिन तक डीडवाना में करीब 15 राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं एवं 2017 में एक राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन कराया जा चुका है। डीडवाना में 60 से अधिक राष्ट्रीय एवं हिरेन्द्र सिंह राठौड़ तीन बार अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग ले चुका है।

राजस्थान बास्केटबॉल संघ का मुख्यालय डीडवाना में विगत 15 वर्षों से स्थित है। श्री अजीत सिंह राठौड़ वर्तमान में राजस्थान बास्केटबॉल संघ के अध्यक्ष है। आप पूर्व में राजस्थान ऑलम्पिक संघ के अध्यक्ष एवं भारतीय बास्केटबॉल संघ के पूर्व उपाध्यक्ष रह चुके हैं। आप वर्तमान में अन्तरराष्ट्रीय फीबा लिगल कमेटी के सदस्य हैं। आप भारतीय बास्केटबॉल टीम के 3 बार मैनेजर रह चुके हैं।

डीडवाना से ही श्री सुरेश मारोठिया अन्तरराष्ट्रीय फीबा टेबिल आफिसियल, श्री हासम खान अन्तरराष्ट्रीय फीबा कमिशनर, श्री हिरेन्द्र सिंह राठौड़ अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ी, श्री सुधीर सिंह राठौड़ अन्तरराष्ट्रीय फिजियों के रूप में भाग लिया है।

नेशनल प्रतियोगिताओं में डीडवाना के खिलाड़ियों ने विगत 2 दो वर्षों में युथ, जूनियर, खेलो इण्डिया राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में संस्कार सैनी—2 बार गोल्ड मेडल, रिषिराज सिंह—गोल्ड मेडल, शक्तीसिंह जोधा—सिल्वर मेडल एंव लविना सैनी—ब्राउंज मेडल प्राप्त किया।

विभाग द्वारा बास्केटबॉल खेल के लिए किये गये प्रयास

वर्तमान में डीडवाना मुख्यालय पर लगभग 16 बास्केटबॉल मैदान स्कूलों, कॉलेजों, स्टेडियम में स्टेथिक एवं प्लास्टिक ब्लाक के मैदान बने हुए हैं जिसमें रोजाना प्रशिक्षकों द्वारा जिसमें एक अल्प

कालीन प्रशिक्षक के रूप में श्री मुकेश राठौड़—एन.आई.एस व नेशनल मेडलिस्ट कार्यरत है साथ में सुरेश मारोठिया शारीरिक शिक्षक व अन्य दो प्रशिक्षकों के निर्देशन में लगभग 150 से अधिक खिलाड़ी (बालक—बालिका) रोजाना अभ्यास करते हैं।

जिला स्टेडियम में खिलाड़ियों के आवास हेतु एक शानदार हॉस्टल एवं दो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के बास्केटबॉल मैदान निर्मित हैं। एक जिला एक खेल स्कीम के अन्तर्गत बास्केटबाल खेल को देने की कृपा करे ताकी उक्त सुविधाओं का सदृचार्योग हो। प्रतिभावान खिलाड़ियों को आवास, भोजन, चिकित्सा, खेल मैदान उवम प्रशिक्षक कि उच्च स्तरीय सुविधा मिल सके एवं डीडवाना—कुचामन बास्केटबॉल खेल में विश्व स्तर पर अपने आपको स्थापित कर सके।



एक जिला एक उपज :- प्याज

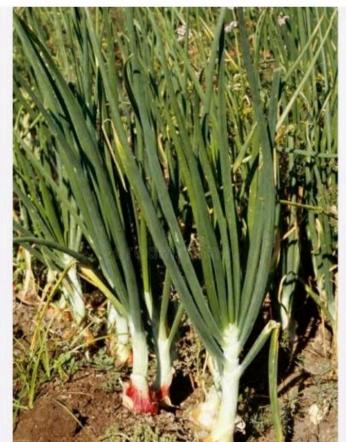
डीडवाना—कुचामन जिले में लगभग 8000–10000 हैक्टर क्षेत्रफल में प्रति वर्ष प्याज की खेती की जाती है। कृषकों द्वारा वर्ष में प्याज की दो फसलें पैदा की जाती है। एक खरीफ व दुसरी रबी।

खरीफ प्याज में नमी का प्रतिशत अधिक होता है। जिससे इसका भण्डारण व प्रसंस्करण करना संभव नहीं है वही रबी प्याज भण्डारण व प्रसंस्करण के लिए उत्तम होता है।

एक जिला एक उपज योजना के तहत डीडवाना—कुचामन जिले में प्याज को प्रमुख कृषि उपज के रूप में चुना गया है। जिले की जलवायु एवं मिट्टी प्याज कि उपज के लिए उपयुक्त मानी जाती है, जिससे यह के किसान बड़े पेमाने पर इसका उत्पादन करते हैं।

जिले में प्याज कि उपज को बढ़ावा देने के लिए कार्य योजना

- प्याज को जी आई टैग दिलवाना।
- प्याज उत्पादन क्षेत्र को विश्व स्तरीय पहचान दिलाना।
- ब्राण्ड बनाना इस फसल को बढ़ावा देकर किसानों कि आय बढ़ाने और इसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचाना।
- कृषक प्रशिक्षण एवं कृषक भ्रमण के माध्यम से किसानों को उन्नत तकनीकों कि जानकारी प्रदान कराना।
- प्याज उत्पादन व विक्रय को बढ़ावा देने के लिए एक दिवसीय राज्य स्तरीय प्याज कृषक मेले का आयोजन किया जाएगा जिसमें जिले के प्याज उत्पादन करने वाले लगभग 5000 किसान भाग लेंगें तथा विभिन्न कम्पनीयों के स्टॉल लगाकर किसानों को प्याज विक्रय के नए व्यापारियों से रुबरु करवाया जाएगा।



एक जिला एक प्रजाति :— खेजड़ी

खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है। खेजड़ी एक कांटेदार और कम पत्तों युक्त पर्णपाती मध्यम आकार का वृक्ष है। इसके पत्तों के झाड़ जाने के कुछ समय बाद ही 6 से 8 वें वर्ष में छोटे और पीले रंग के फूल आना आरम्भ हो जाते हैं। इसकी जड़े जमीन में गहराई तक जाती हैं और भरपूर मात्रा में खनिज एवं पोषक तत्व भूमि की गहराई से प्राप्त करती है। खेजड़ी लगाए जाने से कृषि फसलों को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता है।

खेजड़ी अपेक्षाकृत धीमी गति से बढ़ने वाला वृक्ष है, खेजड़ी की औसत ऊंचाई 5–10 मीटर तक होती है। खेजड़ी वृक्ष ठंडी और अधिक उष्णता (0) डिग्री सेल्सियस से 50 डिग्री सेल्सियस) सहन कर सकता है। खेजड़ी कम ऊंचाई वाले क्षेत्र में होती हैं 100 मि.मी. से 900 मि.मी. तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों लग सकती है। खेजड़ी का वृक्ष हल्की पथरीली, रेतीली और क्षार वाली जमीन (पीएच-9.8 तक) या काली और चिकनी जमीन पर भी पनप सकता है।

- खेजड़ी के पत्ते पशुओं, विशेषकर दुधारू पशुओं, भेड़—बकरियों तथा ऊँटों के लिए चारें के रूप में बहुत उपयोगी होते हैं।
- परिपक्व खेजड़ी की लकड़ी हल्का फर्नीचर, कृषि औजार के हत्थे आदि के निर्माण में प्रयुक्त होती है।
- खेजड़ी हवा से नाइट्रोजन को प्राप्त कर सरल यौगिकों में बदल कर गोठों के रूप में जड़ों पर एकत्रित करने वाले सूक्ष्म जीवाणु जड़ों पर एकत्रित करने वाले हैं, जो कि एक हैक्टर क्षेत्र में 200 कि.ग्रा. नाइट्रोजन तक एकत्रित कर भूमि की उर्वरा शक्ति में अभिवृद्धि करते हैं।
- अकाल के समय चारे की कमी दूर होती है।
- इसी प्रकार खेजड़ी की कच्ची फलियां (सांगरी) से पौष्टिक सब्जी बनती है।
- खेजड़ी की पकी फलियां (खोखे) मरुप्रदेश में ग्रामीण लोगों द्वारा बड़े चाव से खाये जाते हैं।
- खेजड़ी के वृक्ष को धार्मिक दृष्टिकोण से दशहरा पर्व पर पूजा जाता है। खेजड़ी के फूलों की पंखुड़ियां भगवान शिव और दुर्गा माता को चढ़ाई जाती हैं। इसके पत्तों को गणपति की पूजा में भी रखा जाता है और लकड़ियों का यज्ञ में समीधा के लिए उपयोग होता है।

प्राकृतिक रूप से पनपे खेजड़ी के पौधे नष्ट होने का कारण

- कृषि भूमि पर खड़े पेड़ों के बीज अलग—अलग बिखरने पर बीज का खेतों फुटान/अकुरण होता है।

- परन्तु वर्तमान यांत्रिक उपयोग के कारण खेतों में टेई / प्लाऊ चलाने से खेतों छोटे पौधे पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं।
- खेजड़ी को पशुओं, कीड़ों, फंकुंदी एवं प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा से पेड़ों को विपरित प्रभाव पड़ता है।
- प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा से पेड़ों को विपरित प्रभाव पड़ना।
- आमजन व कृषकों को पेड़ों की महत्वता व जानकारी का अभाव होने से खेजड़ी प्रजाति के पेड़ नये कम पनपे रहे हैं।



एक जिला—एक पर्यटन स्थल :— डीडवाना झील



राजस्थान के मारवाड़ का सिंहद्वार एवं शेखावाटी का शतोरण द्वार, आभानगरी व उपकाशी के नाम से प्रसिद्ध डीडवाना खारे पानी की डीडवाना झील के उत्तरी किनारे पर स्थित है। वर्तमान में यह नगर डीडवाना—कुचामन जिले का जिला मुख्यालय है। डीडवाना—कुचामन जिले के डीडवाना तहसील में स्थित यह झील राजस्थान की खारे पानी की झीलों में दूसरा स्थान रखती है जो लगभग 3 से 5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है।

राजस्थान में खारे पानी की झील मुख्यता प्राचीन टेथिस सागर के अवशेष है। लाखों वर्ष पूर्व यह भूभाग महादीपीय विस्थापन के कारण समुद्र से बाहर आ गया था। उस टेथिस सागर के अवशेष आज राजस्थान में खारे पानी की झील के रूप में दृश्य मान है। डीडवाना झील के तल में नमकीन काली कीचड़ पाई जाती है, नमक बनाने के लिए ब्राईन विधि का प्रयोग किया जाता है। जिसमें जल को क्यारियों में वाष्पीकरण द्वारा सुखाया जाता है और नमक बनाया जाता है।

डीडवाना झील को Department of Environment and Climate Change की अधिसूचना दिनांक 19.07.2023 द्वारा वेटलेण्ड क्षेत्र घोषित किया गया है।

- ब्राइन विधि—
 - ब्राइन विधि नमक उत्पादन की विधि है।
 - ब्राइन विधि के द्वारा डीडवाना झील में नमक बनाया जाता है।
 - ब्राइन विधि में क्यारिया बनाकर नमक बनाया जाता है।
 - ब्राइन विधि वाष्पीकरण विधि है। जिसमें वाष्पीकरण कर नमक बनाया जाता है।



- डीडवाना झील में नमक उत्पादन करने वाली संस्था को देवल कहते हैं।
- डीडवाना झील में देशवाल जाति के लोगों के द्वारा नमक बनाया जाता है।
- डीडवाना झील का सर्वाधिक नमक जापान को निर्यात किया जाता है।

नमक झील डीडवाना के सौन्दर्यकरण हेतु निम्न कार्य प्रस्तावित किये गये है :—

1. झील में पुष्कर हाईवे से 400 मी. अन्दर की ओर मिट्टी का ट्रैक बनाया जाकर लगभग 5000 वर्ग.मीटर क्षेत्रफल मिट्टी का आईलेंड (टापू) बनाया जाना प्रस्तावित किया गया है। जिसके चारों ओर पथर की पिचिंग व वॉयर फेंसिंग कार्य किया जायेगा।
2. झील में पर्यटकों के आकर्षण हेतु डीडवाना नमक झील का सैल्फी पोर्ईट तथा फाउन्टेन निर्माण करवाया जाना प्रस्तावित है।
3. झील के चारों ओर रोशनी हेतु लगभग 80 स्ट्रीट लाईट पॉल लगाये जायेंगे तथा 1 हाई मास्क लाईट स्थापित की जानी प्रस्तावित है।